है कि तीर्थंकर और अवतारावाद में भेद रेखा खींची जाए। इस के वाद हमने कुछ तीर्थंकरों का जीवन चारित्र दिया है, जिनका इतिहास जैन परम्परा में विस्तार से मिलता है, ये तीर्थंकर हैं प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव, दूसरे तीर्थंकर भगवान अजीतनाथ, १९वें तीर्थंकर भगवती भल्लीनाथ, २२वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ व भगवान पार्श्वनाथ का चारित्र का संक्षिप्त में वर्णन किया गया है। शेष तीर्थंकरों का वर्णन परिशिष्ट में दिया गया है।

खण्ड - २

यह खण्ड प्रभु महावीर के जीवन चारित्र से प्रारम्भ होता है। प्रथम अध्ययन में भगवान महावीर के पूर्व २८ भवों का वर्णन किया है। यह खण्ड दिलचस्प है। प्रभु महावीर को महावीर वनने से पहले कितनी वार नरक, स्वर्ग, पशु व मनुष्य योनि में जन्म लेकर कर्मफल भोगना पडा इसका वर्णन विस्तार से किया गया है। इस वात से सिद्ध होता है कि तीर्थंकर का जीव मानव जन्म की चरमोत्कर्ष अवस्था है।

द्वितीय अध्ययन में भगवान महावीर के जन्म के समय समाजिक, राजनेतिक, धर्मिक परिस्थितियों का वर्णन किया गया है। भगवान महावीर का युग दास प्रथा का युग था। स्त्री व शुद्रों की अवस्था वहुत दयनीय थी। समाज में प्राचीन श्रमण परम्परा (भगवान पार्श्वनाथ) कमजोर हो गई थी। वेद, ब्राह्मण, वलि प्रथा धर्म का अंग वन गए। इन्हीं परिस्थितियों का वर्णन हमारे द्वारा प्राचीन साहित्य के आधार पर किया गया है।

तृतीय अध्ययन में प्रभु महावीर के जन्म का वर्णन है। देवता द्वारा उनके द्वितीय जन्म कल्याणक पर ६४

इन्द्रों का सपरिवार देव देवीयों के आने का वर्णन है। फिर उनके बचपन की अलोकिक लीलाओं का वर्णन किया गया है। प्रभु महावीर के विवाह, माता पिता के स्वर्ग सिधारने पर दीक्षा के संकप का वर्णन किया गया है। साथ में दिगम्बर परम्परा का वर्णन करके प्रभु महावीर के जीवन की मान्यता को तुल्नात्मक पक्ष प्रस्तुत किया गया है।

चर्तुथ अध्ययन में नौ लोकांतिक देवों की प्रेरणा से प्रभु महावीर द्वारा दीक्षा ग्रहण करने का वर्णन है। देवता द्वारा प्रभु महावीर की चन्द्रप्रभा पालकी उठाने का वर्णन है। प्रभु महावीर द्वारा क्षत्रियकुण्ड के वाहर दीक्षा ग्रहण करने का विवेचन किया गया है। दीक्षा लेते ही उन्हें चतुर्थ मन पर्यव ज्ञान हो गया। प्रभु ने केशलोच किया साथ में इन्द्र द्वारा देवदुष्य वस्त्र देने का वर्णन है।

खण्ड - ३

इस खण्ड में प्रभु महावीर की साढ़े वारह वर्ष की साधना का वर्णन है। प्रभु महावीर इन वर्षों में कहां कहां पधारे, क्या क्या प्रमुख घटनाएं हुई। उन्हें मनुष्यों, पशु व देवों ने किस तरह के कष्ट दिए, कैसे कैसे कष्ट उन्होंने अपने सुकुमार शरीर पर झेले। इन सव का वर्णन इस खण्ड के प्रथम अध्ययन में किया गया है। इस में ही आजीवक धर्म के मंखलि पुत्र गोशालक का वर्णन है। इसी खण्ड में राजकुमारी से दासी वनी साध्वी चन्दनवाला का वर्णन है। प्रभु महावीर के २१ गुणों का वर्णन है। जो कल्प सूत्र पर आधारित है जो अलंकारिक भाषा में है।

दूसरे अध्ययन में प्रभु महावीर को हुए केवल्य ज्ञान का वर्णन है। केवल्य ज्ञान ऋजुवालिका नदी के किनारे हुआ था। केवल्य ज्ञान प्रभु महावीर समारोह देवताओं ने

धूमधाम से मनाया। इस के वाद देवताओं ने समोसरण की रचना की। प्रभु महावीर का पहला उपदेश देवताओं ने सुना। इस घटना को जैन धर्म में अंछेरा (अचम्भा) माना गया। कभी किसी तीर्थंकर की देशना वेकार नहीं जाती। यहां से चल कर प्रभु महावीर पावा पूरी आए, ऐसा श्वेताम्वर मान्यता है। दिगम्वर परंपरा के अनुसार भगवान महावीर का प्रथम उपदेश राजगृही नगरी के विपुलाचल पर्वत पर हुआ था।

खण्ड – ४

प्रथम अध्ययन में केवल्यज्ञान महोत्सव समोसरण रचना का विस्तार में शास्त्रों के अनुसार वर्णन किया है। द्वितीय अध्ययन में प्रभु महावीर के ११ गणधर का इतिहासक उल्लेख है। यह क्रिया कण्डी ब्राह्मण थे। सभी के साथ शिष्यों का विशाल परिवार था। सभी के मन कुछ संशय थे। जिसका समाधान प्रभु महावीर ने अपनी प्रथम देशना पावपुरी में किया। इन ब्राह्मण गणधरों के नाम हैं १. इन्द्र भूति गौतम २. अग्निभूति ३. वायूभूति ४. व्यक्त ५. सुधर्मा, ६. मण्डित ७. मोर्यपुत्र, ८ अंकपित, ९. अचलभ्राता १०. मेतार्य ११. प्रभास

इन में सव से वडे इन्द्रभूति गौतम थे। यह महात्मा वुद्ध से भिन्न हैं। इनके गणधरों के शिष्यों की गिनती ४४४० थी। जो सव गणधर के साथ दीक्षित हुए थे। इस दिन श्री संघ की स्थापना हुई। प्रभु महावीर ने प्रथम उपदेश दिया।

गणधरों के प्रश्न :

१. आत्मा २. कर्म ३. आत्मा व शरीर ४. मन और पांच भूत ५. इहलोक-परलोक ६. वंध और मोक्ष

७. देव का आस्तित्व ८. नरक ९. पुण्य-पाप १०. परलोक ११. मोक्ष

प्रभु महावीर का यह ब्राह्मण शिष्य वन गए। प्रभु महावीर की क्रान्ति का विगुल वज चुका था। फिर जो प्रभु की शरण में आया वह प्रभु महावीर के शिष्य वन गया, उस का कल्याण होता गया। प्रभु महावीर ने इन लोगों से प्रश्नों का उत्तर, वेदिक ग्रंथों के आधार पर दे कर अनेकांतवाद के सिद्धांत को भी स्थापित किया। इस अध्ययन में चन्दनवाला के दीक्षा का भी उल्लेख हे। इस प्रकार महावीर ने चतुंविधि श्री संघ की स्थापना की। अगले अध्ययन का नाम तीर्थ स्थापना है। प्रभु महावीर व दो प्रकार का धर्म वर्णन किया। १. श्रमण धर्म २. श्रावक धर्म। प्रभु महावीरं द्वारा वताए धर्म की व्याख्या का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। प्रभु महावीर ने नव तत्व, षट् द्रव्य, पांच महाव्रत, समिति, गुप्ति, अणुव्रत, विषयों का संक्षिप्त वर्णन किया है उसका उल्लेख है।

खण्ड - ५

इस में एक ही अध्ययन है, वह है प्रभु महावीर द्वारा अपने धर्म का प्रचार। प्रभु महावीर ने ४२ वर्ष तक राजा के महलों से गरीव की झोंपडी तक अपना पवित्र संदेश पहुंचाया। इस खण्ड में आंकलन वर्ष वार व्योरे द्वारा किया गया है। प्रभु महावीर के दरवार में राजा रंक एक वरावर थे। प्रभु महावीरे के यह देश, काल, जाति, लिंग रंग व नस्ल का भेद नहीं था। प्रभु के उपासक में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, किसान, कुम्हार, चण्डाल तक स्त्री, पुरूष सभी वरावरी के साथ प्रभु उपदेश सुन्ने के अधिकारी थे। अर्जुन माली जैसे साधु वन गए। अनेकों विदेशी साधक भी उनके धर्म संघ

में समिल्लित हुए। यह सभी इतिहास का महत्वपूर्ण भाग हैं। हमारा प्रयत्न रहा है कि महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन जैन शास्त्रों के अनुसार कर दिया जाए। यह ग्रंथ हमारे धर्म जीवन की महत्वपूर्ण निधि है।

प्रभु महावीर ने अपने जीवन में सव से महत्वपूर्ण स्थान स्त्री जाति को दिया है। वोद्ध संघ में महात्मा वुद्ध ने स्त्रियों को वडे विवाद के वाद स्थान दिया। परन्तु तीर्थंकर महावीर जिस परम्परा की कडी थे वहां साध्वी परम्परा प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से चल रही थी। परन्तु भगवान महावीर को शुद्र स्त्रीयों को धर्म वरावरी के लिए ब्राह्मणों के तीव्र विरोध का सामना करना पड़ा। ब्राह्मणों की मान्यता थी कि स्त्री, पशु व शुद्र एक श्रेणी के जीव हैं। इन से कठोरता से व्यवहार होना चाहिए। यह स्त्री व शुद्र किसी तरह की स्वतन्त्रता के योग्य नहीं। प्रभु महावीर इन मान्यताओं के खण्डन कर उन्हें मोक्ष का अधिकारी वनाया। प्रभु महावीर ने जीवात्मा को ही परमात्मा माना। सृष्टि, आत्मा, परमात्मा के वारे में उन्होंने स्वतन्त्र दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। यही दृष्टिकोण जैन धर्म को देसरे धर्मों से सिद्धांतिक रूप से अलग करता है। उन्होंने आत्मा की सर्वोच्च सत्ता को स्वीकार किया। हिन्दी भाषा में यह ग्रंथ हमारी परम उपलव्ध है। इस की समीक्षा दैनिक ट्रिव्यून, अजीत व पंजाव केसरी व गुण्स्थान में प्रकाशित हुई।

समर्पित जीवन ८ :

यह एक गुरू द्वारा अपने शिष्य का परिचय देने की सामान्य चेष्टा है। प्रस्तुत पुस्तक में मैंने अपने धर्मभ्राता श्री रविन्द्र जैन का परिचय दिया है। यह एक गुरू की शिष्य को अनुपम भेंट है। इस व्यक्ति के माध्यम से मुझे देव, गुरू व धर्म की सेवा करने का सुअवसर मिला है। यह पुस्तक मैंने

उस के ४०वें जन्म दिन पर भेंट की थी। इस का विमोचन भी मैंने ही किया है।

अनजाने रिश्ते ६ :

यह पुस्तक मेरी अनुभूतियों को प्रकट करने वाली पुस्तक है। पुस्तक में जैन धर्म में आत्मा परमात्मा, कर्म, पुनंजन्म, नवतत्व आदि सिद्धांतों का विवेचन दार्शनिक ग्रंथों के आधार पर किया गया है। इस के वाद मैंने स्वप्न के आधार पर अपनी आत्मा अनुसार विवेचन किया है। जैन धर्म में स्वप्नों का कितना महत्व है, इसी वात को आधार मान कर मैंने देखे स्वप्नों का वर्णन किया है। यह अद्भुत पुस्तक है। इस पुस्तक की समीक्षा पंजाव के प्रसिद्ध दैनिक पंजाव केसरी में प्रकाशित हुई थी। इस की प्रेरणा मुझे श्रीमती अमृता प्रीतम की पुस्तक "लाल धागे का रिश्ता" से मिली थी। मैंने जो स्वप्न देखे उनका विवेचन करने के पश्चात मुझे ज्ञात हुआ कि स्वपन भविष्य की घटनाओं की पूर्व सूचनाएं देते हैं। इन में से एक स्वप्न नाग मणि पत्रिका पंजावी में प्रकाशित हुआ। यह दोनों पुस्तक का लेखन कार्य मेरे द्वारा सम्पन्न किया गया। इस पुस्तक के सम्पादन का दायित्व मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन ने निभाया। इस पुस्तक का समर्पण जयपूर में महावीर इंटरनैशनल जयपूर के समारोह में सम्पन्न हुआ। पुस्तक का विमोचन इस पुस्तक की प्रेरिका प्रसिद्ध विदूषी श्रीमती अमृता प्रीतम ने दिल्ली में अपने निवास स्थान पर किया। इस पुस्तक में मेरी कई विषयों पर अनुभूतियां दर्ज हैं। द्वितीय भाग में पुर्नजन्म से संवंधित घटनाएं दर्ज हैं जिनका संवंध जैन इतिहास से है। तीसरे भाग में तीर्थंकरों की माता द्वारा देखे गए स्वप्न हैं। श्रमण भगवान महावीर को आए स्वप्न व सम्राट चन्द्रगुप्त मोर्य को आए स्वपनों का वर्णन हे। अंतिम खण्ड में मेरे

द्वारा देखे स्वप्नों का वर्णन व विवेचन है। यह पुस्तक अपने ढंग की एक पुस्तक है जिस में स्वप्नों का अध्यात्म से मिलान किया गया है। इस पुस्तक के आधार पर मैंने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि मुनष्य के जीवन में स्वप्नों का कितना महत्व है। इन से हमारा कैसा रिश्ता है ? कैसे यह हमारी मनोदशा को प्रभावित करते हैं। सब का विवेचन दिया गया है।

हमारे द्वारा सम्पादित साहित्य

हम दोनों ने पंजाबी हिन्दी भाषा के लेखन कार्य के साथ साथ सम्पादन कार्य भी किया है। हमारे द्वारा सम्पादित ग्रंथों में कुछ इस प्रकार हैं जिन ग्रंथों का संपादन करने का हमें सौभाग्य मिला है।

आस्थांजली १ :

वर्तमान प्रभावक जैन आचार्यों में विश्व केसरी, जैन धर्म दिवाकर, विद्या प्रभावक श्री विमल मुनि जी महाराज का अपना स्थान है। आप से हमारा परिचय ३० वर्ष से भी ज्यादा पुराना है। आज आप व्योवृद्ध अवस्था में भी जैन धर्म का प्रचार प्रसार हेतु लगे रहते हैं। आप एक निर्भीक श्रमण हैं जो प्रभु महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह व अनेकांतवाद सिद्धांतों को समर्पित हैं। परोपकार, शिक्षा, सेवा, साधना व साहित्य आपकी जैन धर्म को प्रमुख देन है। वह क्रान्तिकारी भिक्षु है, वह संसार का कई बार भ्रमण कर चुके हैं। वह किसी प्रकार भी सन्मान की भावना से दूर रहते हैं। लाखों नए लोगों को उन्होंने जैन धर्म में दीक्षित किया है। उनका जन्म कुप्प कलां में आज से ६९ वर्ष पहले पंडित देवराज व माता गंगादेवी के यहां ब्राह्मण कुल में हुआ। यह परिवार जैन परम्परा से घृणा करता था। आप को दीक्षा ग्रहण करने में

लाखों रूकावटों, कष्टों व परिषहों को सहना पड़ा। आप ने सभी कष्टों को हंस कर सहन किया। १९४० में आप जी जगदीश मुनि जी के शिष्य बने।

आप की दीक्षा के जब ५० वर्ष पूरे हुए, तो हमारे मन में उन्हें अभिनंदन ग्रंथ भेंट करने की भावना हुई। हमारी दृष्टि में उन्हें भेंट करने के लिए इस समर्पण ग्रंथ के इलावा कोई सुन्दर वस्तु नहीं थी। महाराज श्री इस प्रकार के वाह्य आडम्बरों का विरोध करते रहे हैं। आप का मानना है कि श्रावक का धन परोपकार में लगना चाहिए। झूठे आडम्बरों से लाभ समाज को कुछ प्राप्त नहीं होता। हम लोगों ने महाराज जी के भक्तों की एक मीटिंग बुलाई। इस मीटिंग में अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित करने का निर्णय किया गया। भक्तों ने हमारे कार्य में तन मन से सहयोग करने का विश्वास दिलाया। यह सारे पंजाब में प्रथम अभिनंदन ग्रंथ था जो किसी जैन मुनि को अर्पित किया गया। फिर हम आचार्य श्री के पास पहुंचे। उन्हें प्रार्थना की श्री संघ के ५०वें दीक्षा दिवस पर आप का अभिनंदन करना चाहता है। इस अवसर पर आप का आचार्य पद महोत्सव भी मनाना है जो संघीय दृष्टि से जरूरी है। इसी चादर महोत्सव पर आप को अभिनंदन ग्रंथ भेंट करने का हमारा निर्णय है।"

आचार्य श्री ने कहा "मैं तो एक जैन साधू हूं। मूझे इन वंधनों में क्यों उलझाते हो।"

हमारे द्वारा वार वार आग्रह करने के वाद वह मान गए। फिर हमने जैन आचार्य श्री विमल अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशन समिति का निर्माण किया। इस की संयोजिका साध्वी डा० जैन भारती (वर्तमान में साध्वी)। हम दोनों को प्रधान सम्पादक वनाया गया। सम्पादक मण्डल में श्रीमती मोहनी कौल, डा० डी.सी. जैन कुरूक्षेत्र, डा० धर्म सिंह को लिया

गया। फिर हमें जैन धर्म के चारों सम्प्रदायों के आचार्यों, साधु, साध्वी, श्रावकों से पत्र व्यवहार करना पड़ा। राजनेता व समाज सेवको से संदेश सस्मरण, व लेख लिखने की प्रार्थना की गई। भारत के कोने कोने से महान विद्वानों के लेख, हिन्दी, पंजाबी, अंग्रजी भाषा में प्राप्त हुए। यह लेख जैन धर्म, संस्कृति, इतिहास दर्शन, कला, व पुरातत्व व साहित्य गणित आदि के संदर्भ में थे। यह हिन्दी पंजाबी व अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होने वाला प्रमाणिक धर्म ग्रंथ था। शायद ही ऐसा कोई विषय बचा हो, जिस पर इस ग्रंथ में विद्वानों के लेख प्रकाशित न हुए हों। ग्रंथ के प्रारम्भ में आचार्य श्री के जीवन पर लेख, कविता व संदेश थे। ज्यादा हिस्सा शोध निबंधों से भरपूर था। उनके प्रवचनों के अंश प्रकाशित करने का निर्णय हुआ। यह कार्य श्रीमती मोहनी कौल ने किया। उन दिनों कम्पयूटर नए आए थे। महाराज श्री का ५०वां दीक्षा दिवस करीब था। ग्रंथ प्रैस में नहीं छप रहा था। ग्रंथ का कुछ भाग कम्पयूटर द्वारा छापा गया। सारा कार्य जालंधर श्री संघ के हाथों सम्पन्न हुआ।

ग्रंथ विमोचन व आचार्य पद महोत्सव

इस ग्रंथ का विमोचन जालंधर श्री महावीर जैन भवन कपूरथला रोड में सम्पन्न हुआ। यह दो दिन का भव्य समारोह था। पहला दिन समारोह शाम को रंगारंग प्रोग्राम था, जिस में एक महाराष्ट्र को नृत्यक ने इन्द्र की सभा व महावीर जन्म कल्याणक का नृत्य दिखाया। इस बूढे कलाकार की कला ने हमें बहुत प्रभावित किया। पूछने पर पता चला कि यह तो विदेशों में भी कार्यक्रम दिख चुका है। वैसे पुरानी फिल्मों में नृत्य का कार्यक्रम आयोजित कर चुका है।

दूसरे दिन भव्य समारोह जैन भवन में भूतपूर्व

रैशन जज श्री हरिचन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुआ। आचार्य श्री को भव्य आसन पर बैठाया गया। सैंकडों चादरें उनके आचार्य पद के अनुमोदन हेतु श्री संघ ने उन्हें भेंट की।

इस अवसर पर आचार्य श्री विमल मुनि अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन श्री मोदी ने किया। उन्होंने ग्रंथ को सिर पर धारण कर, महाराज श्री को भेंट किया। इस ग्रंथ की प्रशंसा विद्वत जगत में वहुत हुई। यह ग्रंथ देश विदेश में पहुंचा। यह ग्रंथ हमारे लिए प्रथम अनुभव था। इस ग्रंथ के सम्पादन से हमें जैन धर्म पर नई वातों का पता चला। हमारा विद्वानों से परिचय वना। यह वहुत वड़ी उपलब्धि थी। महाराज श्री का आशीवाद प्राप्त हुआ।

निरयावलिका सूत्र आदि पांच उपांग ६:

निरयावलिका सूत्र का हमारे द्वारा किया पंजावी अनुवाद अभी अप्रकाशित है। जव हम निरयावालिका सूत्र की वात करते हैं तो इस के साथ ४ अन्य उपांग हैं। इस तरह निरयावलिका प्राचीन उपांगों का संग्रह है। नंदी सूत्र के अनुसार कभी यह विशाल उपांग थे। वर्तमान में निरयावलिका वहुत ही लघु काय ग्रंथों का संग्रह है। हमारे अतिरिक्त इस शास्त्र का अनुवाद वहुत विद्वानों ने हिन्दी, गुजराती, जर्मन व अंग्रेजी भाषाओं में किया है। पर सव वडी हिन्दी टीका श्रमण संघ के प्रथम जैन आचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज ने १९४८ में सम्पन्न की थी। ३० जनवरी १९६२ के उनके स्वर्गवास के वाद यह शास्त्र प्रकाशित न हो सका।

एक दिन हम स्व. साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के चरणों में वैठे थे। उन्होंने हमें अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए आदेश दिया कि "वर्षों से मेरे मन में एक इच्छा है कि आचार्य श्री के किसी अप्रकाशित आगम का

संपादन करके प्रकाशित कराउं। मैंने सुना है कि आचार्य श्री के कुछ आगम अप्रकाशित हैं। आप पूज्य श्री रत्न मुनि जी महाराज के पास जा कर पता करो कि कौन कौन सा शास्त्र अप्रकाशित है। हम उसके प्रकाशन की व्यवस्था श्रावक संघ से करवा देंगे। उसके संपादन में मेरी सभी श्रमणीयां सहयोग देंगी। आप को मैं एक पत्र पूज्य रत्न मुनि जी महाराज के नाम देती हूं, आप लुधियाना जाओं, उनको हमारा संदेश दो, वह बहुत कृपालु मुनि हैं, वह हमारी इच्छा जरूर पूरी करेंगे।''

हम साध्वी श्री को इनकार कैसे कर सकते थे, पर शास्त्रों की भाषा प्राकृत संस्कृत होने के कारण हमें किसी सहायक की जरूरत थी। जैसे ही लुधियाना में पूज्य श्री रत्न मुनि जी को साध्वी श्री का पत्र दिया, उन्होंने हमारी प्रार्थना स्वीकार करके हमें ६ कापीयां, जो आचार्य श्री ने लिखवाई थी, हमें प्रदान कर दी। साथ में उन्होंने कहा ''आप साध्वी श्री से कहें कि किसी अच्छे विद्वान से भाषा का सम्पादन करवा के इसे प्रकाशित करवा दें।''

यह कापीयां लेकर साध्वी श्री के पास आए। साध्वी श्री उन कापीयों को पाकर बहुत प्रसन्न हुई। उन्होंने कहा ''भैया ! घबराना नहीं। शास्त्र का सम्पादन हम करेंगे। एक बार आप आचार्य श्री की कापीयां पढ़ लो, फिर संपादन करना। बाद में प्रकाशन की व्यवस्था हो जाएगी। हमारे जितने ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं, सब से अधिक समय, इस ग्रंथ ने लिया। इस के दो कारण थे। एक आत्म जैन प्रिंटिंग प्रैस की अव्यवस्था थी व दूसरा पंजाब में व्याप्त आतंकवाद था। इस शास्त्र की प्रधान सम्पादिका हमारी गुरूणी जिन शासन प्रभाविका जैन ज्योति श्री स्वर्णकांता जी महाराज नहीं हुई। सम्पादन मण्डल में हम दोनों के अतिरक्त सरलात्मा साध्वी

सुधा जी महाराज की शिष्या साध्वी डा० स्मृति जी व श्री तिलकधर शास्त्री शामिल हुए।

सम्पादक मंडल हर सप्ताह अम्बाला में मिलता। पाठ संशोधन का कार्य काफी कठिन था। आचार्य श्री ने यह कार्य वर्षों पहले सम्पन्न किया था। उस समय की हिन्दी वर्तमान हिन्दी में काफी अंतर था। कई स्थान पर तो मूल पाठ प्रमादवश छुट गए थे। परन्तु आचार्य श्री ने अपनी प्रस्तावना में उपयोग में आये ग्रंथ व टीका का नाम लिखे था यह उपयोगी ग्रंथ हमें पूज्य श्री रत्न मुनि जी महाराज ने भण्डार से निकाल कर दिये। इन ग्रंथों से हमं पाठ संशोधन में वडी सहायता मिली। आचार्य श्री द्वारा लिखित मूल प्राकृत पाठ व छाया पूज्य आचार्य श्री घासी लाल जी महाराज से मिलती जुलती थी। आचार्य श्री घासी लाल जी महाराज उन महान आचार्यों में एक हुए हैं जिन्होंने ३२ आगमों का अनुवाद हिन्दी, गुजराती में साथ साथ किया है। साथ में संस्कृत भाषा में उन्होंने टीका स्वयं लिखा है। यह ग्रंथ और अन्य प्रकाशित अनुवाद हमारे लिए वहुत उपयोगी रहे। २ वर्ष के लम्वे परिश्रम के वाद एक प्रारूप सामने आया। इस का प्रकाशन आत्म जैन प्रिंटिंग प्रैस लुधियाना में ६ वर्ष तक होता रहा। इस कार्य में आत्म रश्मि के संपादक प० तिलकधर शास्त्री जी का सहयोग हमें प्राप्त हुआ। वह १९७३ से हमारे परिचित सज्जन थे। जव वह २५००वां महावीर निर्वाण शताब्दी संयोजिका समिति पंजाव के सलाहकार नियुक्त हुए थे।

इस शास्त्र के लिए आशीवाद वचन स्व० आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महारज ने रोनिला (हरियाणा) में लिखा। अम्वाला में आप के भव्य प्रवेश पर १०० से ज्यादा साधु साध्वी इकट्ठे हुए। हमारी गुरूणी ने उसी शाम को हुए

सम्मेलन में यह शास्त्र की प्रथम प्रति आचार्य श्री को समर्पित की। शास्त्र विभिन्न साधु साध्वीयों को आचार्य श्री ने स्वयं वितरित किए। यह समारोह रेडक्रास भवन अम्बाला में हुआ। इस ग्रंथ की प्रस्तावना साध्वी डा. श्री मुक्ति प्रभा जी महाराज ने लिखी। फ्रांस की प्रसिद्ध जैन विदूषी डा० नलिनी बलवीर ने शास्त्र के बारे विद्वता पूर्ण विचार प्रकट किए।

इस शास्त्र का समर्पण समारोह दिल्ली के विवेक विहार में हुआ। जहां इस की प्रति साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज को भेंट की गई। इस भव्य दीक्षा दिवस पर स्व० भण्डारी श्री पदम चन्द जी महाराज अपनी शिष्य मण्डली सहित विराजमान थे। यह हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण शास्त्र का कार्य था। आचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज की अंतिम कृति का प्रकाशन उनकी दीक्षा शताब्दी पर हुआ। आचार्य श्री बहुत महान साहित्यकार भी थे। उनकी कृति हमारे लिए उनके जीवन का महत्व बताने के कारण थी। शास्त्र में मूल के पाठ के अतिरिक्त संस्कृत छाया, शब्दार्थ, मूलार्थ, व्याख्या व टीका थी। यह कार्य बहुत विशाल था। इस ग्रंथ की भूमिका हम दोनों ने लिखी। इस ग्रंथ का राष्ट्रीय व अंर्ताष्ट्रीय स्तर पर सन्मान हुआ।

इस ग्रंथ का विमोचन बहुत ही भव्य था। हमारे पूज्य जैन आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज का अंतिम सम्मेलन था। यह विश्व धर्म सम्मेलन था जो कृपाल बाग दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इस शास्त्र का विमोचन कृपाल बाग में रूहानी सतसंग मिशन के प्रमुख संत राजेन्द्र सिंह जी महाराज ने अपने कर कमलों से किया। स्व० आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज ने अपने प्रवचन में हम दोनों की बहुत प्रशंसा की थी। यह सम्मेलन तीन दिन तक चला। संसार के कोने कोने से देशी विदेशी लोग हर धर्म को मानने

वाले पधारे थे।

आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज से यह हमारी अंतिम मुलाकात थी। वह काफी अस्वस्थ्य होते हुए भी इस सम्मेलन में पधारे थे। वह हमारे बहुत पूज्य थे। वह अंतराष्ट्रीय स्तर के संत थे। जिन्होंने हमें अंतराष्ट्रीय सम्मेलनों में आमंत्रित कर, सौभाग्य प्रदान किया था। हम सारा जीवन उनके उपकार कभी नहीं भूला सकते। साध्वी श्री को इस विमोचन से अथाह प्रसन्नता हुई। उन्होंने हमें आत्मा से आशीवाद दिया जो उनका स्वभाव था।

महाश्रमणी अभिनंदन ग्रंथ २ :

महाश्रमणी उपवर्तनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का ४०वां दीक्षा महोत्सव १९८९ में मनाया गया। ठीक दस वर्ष वाद उनकी दीक्षा स्वर्ण जयंती आने वाली थी। मेरे धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन के मन में साध्वी श्री का अभिनंदन समारोह उत्सव मनाने हेतु उनकी शिष्याओं को तैयार किया। आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज की प्रेरणा हमें मिली। कुछ समय हम कई कारणों से चुप हो गए। परन्तु अनकी शिष्या साध्वी सुधा जी महाराज ने अचानक हमें देहली वुलाया। इस ग्रंथ पर कार्य करने की प्रेरण दी। हमें आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज ने प्रकाशन कार्य में हर तरह के सहयोग का आश्वासन दिया। इस कार्य को लेकर एक भव्य योजना वनी। साध्वी स्वर्णा अभिनंदन ग्रंथ समिति का निर्माण हुआ। इस का मुख्यालय मालेरकोटला व अम्वाला रखे गए। ग्रंथ की रूप रेखा इस तरह वनाई गई।

टिप्पणी : इस महाश्रमणी ग्रंथ की तैयारी व रूप रेखा का विवरण अलौकिक समारोह शीर्ष के अर्न्तगत विस्तृत रूप में आगे दिया गया है।

१. राष्ट्रीय नेताओं के संदेश २. संस्मरण ३. कविताएं ४. आस्थांजली ५. जीवन का विस्तार परिचय यह प्रथम खण्ड में आया। द्वितिय खण्ड में साध्वी परिवार के विस्तृत लेख व हमारे लेख थे। जो साध्वी जी के जीवन पर थे। तृतीय खण्ड जैन दर्शन, साहित्य, कला, मंत्र, तंत्र, पुरातत्व, तीर्थ स्थल, देव देवीयों सबंधी मान्यताओं पर आधारित शोध निबंधों का था। ५०० पृष्ठ का यह विस्तृत ग्रंथ आगरा से दिवाकर प्रकाशन द्वारा श्री श्रीचन्द सुराणा की देख रेख में प्रकाशित हुआ। इस ग्रंथ की प्रेरिका साध्वी श्री राजकुमारी जी व साध्वी श्री सुधा जी महाराज थे। इस के प्रधान सम्पादक थे साध्वी डा० स्मृति जी महाराज, श्री रविन्द्र जैन व पुरूषोत्म जैन, धर्म सिंह थे। यह ग्रंथ सारा कम्पयूटर पर प्रकाशित हुआ। साध्वी जी के जीवन के संवंध में ढेर सारे चित्र प्रकाशित हुए। प्रवर्तनी साध्वी श्री पार्वती जी महाराज से अब तक सभी साध्वीयों की परम्परा का उल्लेख दिया गया। हमारे तीन खण्डों में तीन लेख प्रकाशित हुए। एक वर्ष के कठोर श्रम के बाद यह ग्रंथ तैयार हो गया। ग्रंथ का वजन काफी था। इस ग्रंथ का विमोचन रंगारंग समारोह में हुआ। जिसकी तैयारीयां हम वर्षो से कर रहे थे। इस ग्रंथ में आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज व उनसे संबंधित विद्वानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस ग्रंथ में हमे अनेकों विद्वान आचार्यो, उपाध्याय, साधु, साध्वीयों, श्रावकों, श्राविकाओं के लेख प्राप्त हुए। यह साधु व श्रावक जैन धर्म के सभी सम्प्रदायों के थे। अनेकों बुद्धिजीवीयों ने इस ग्रंथ में अपने विचार लेखों के माध्यम से रखे। इनमें डा० तेज सिंह गोड़ उज्जैन का सहयोग महत्वपूर्ण है। इस ग्रंथ के लेखों के लिए परिपत्र समस्त भारत में प्रेषित किया गया। जिसका प्रारूप श्री जितेन्द्र जैन वाडमेर ने तैयार किया था।

आखिर समारोह का दिन आ गया। इस समारोह में आचार्य श्री नित्यानंद जी महाराज विशेष रूप से पधारे थे। सारे उत्तर भारत से ७० साधु साध्वीयां पधारे थे। हजारें की संख्या में श्रावक, श्राविकाएं समस्त भारत से पधारे थे। यह समारोह काशी राम जैन स्कूल के विशाल प्रांगण में मनाया गया। इस में साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज को उनकी दीक्षा जयंती पर अभिनंदन पत्र भेंट किया गया। एक मंच पर विशिष्ट अतिथियों के लिए लगाया गया। अभिनंदन पत्र का वाचन डा० मदन लाल हसीजा निर्देशक भाषा विभाग पंजाव ने किया। इस अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन हरियाणा अरैंवली के स्पीकर श्री फकीर चंद अग्रवाल ने अपने कर कमलों से किया समस्त सम्पादक मण्डल की और से हमारे द्वारा यह ग्रंथ साध्वी श्री को समर्पित किया गया।

इसी दिन साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज द्वारा लिखित नंद मणिकार वाल चित्र कथा का विमोचन उनके संसारिक भतिजे श्री कीमत राम जैन देहली ने किया। ग्रंथ की प्रतियां विद्वानों व मेहमानों को दी गई। इस अवसर पर इंटरनैशनल पार्वती जैन अवार्ड डा० किरण जैन को भेंट किया गया। महाश्रमण नाम पुस्तक का विमोचन भी हुआ। साध्वी श्री ने अपने शिष्य परिवार के साथ पधारे मुनियों का सम्मान शाल भेंट करके किया।

हमें विशिष्ट अतिथि रत्न पद से अलंकृत किया गया। यह ग्रंथ साध्वी श्री के क्रान्तिकारी जीवन के उल्लेख से भरा पड़ा है। वह जीवन भर महान तप अराधिका धर्म प्रसारिका, साहित्य प्रेरिका रहीं। स्वयं उन्होंने जैन धर्म के परम्परागत ग्रंथों का संकलन किया। इस अवसर पर सम्पादक मण्डल के जैन विद्वानों का सन्मान भी श्री संघ ने किया।

यह समारोह हमारे जीवन के महत्वपूर्ण समारोह

में से था। इस समारोह के माध्यम से हमें हमारी साहित्य प्रेरिका संथारा साध्वी श्री स्वर्णकांता जी का अभिनंदन अभिनंदन ग्रंथ के माध्यम से करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जैन धर्म के प्रसिद्ध विद्वानों को करीब से देखने, उनसे बातें करने का सौभाग्य मिला।

इस समारोह में महासाध्वी उपप्रवर्तनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के शिष्य परिवार का हर प्रकार का सहयोग रहा। अम्बाला श्री संघ, स्थानीय संस्थाओं द्वारा उन्हें अभिनंदन पत्र प्रस्तुत किए गए। हमारी संस्था व श्री संघ ने साध्वीयों को शाल ओढ़ाए गए।

इसके एक वर्ष वाद हमारी गुरूणी बीमार पड गई। यह बीमारी उनके देवलोक का कारण वनी। वह लगभग २ साल मृत्यु से लडती रहीं। अंतिम ११ दिन का संथारा उन्हें आया। उनके जीवन के साथ हमारा जीवन भर नाता रहा। वह सरलात्मा, घोर तपस्वनी, पर उपकारी साध्वी थीं। जिन शाषण का श्रृंगार थी। सपष्ट वक्ता, निर्भिक श्रमणी थी। उन्होंने असत्य से कभी समझौता नहीं किया था। उनके गुणगान का वर्णन किसी शव्दों का मोहताज नहीं। उनका स्मारक, उनके साहित्य कार्य हैं। अंतिम समय भी हम दोनों ने भगवान महावीर का सचित्र जीवन चारित्र लिख कर प्रकाशित किया। यह ग्रंथ उन्हें ही समर्पित था। इस ग्रंथ के अतिरिक्त उनकी शिष्याओं ने हमें प्रेरणा देकर एक महत्वपूर्ण संस्था का निर्माण साध्वी श्री राजकुमारी जी महाराज व साध्वी श्री सुधा जी महाराज ने सन्मति नगर कुप्प में आदिश्वर धाम के प्रांगण में किया। दोनों साध्वीयों ने अपने कीमती ग्रंथ साध्वी स्वर्णा जैन इस पुस्तकालय को भेंट स्वरूप दिए।

हमारे साहित्य के अंर्तगत हमने हमारे द्वारा

प्रकाशित हर छोटी वडी पुस्तिका का संक्षिप्त वर्णन किया है। उनमें से कुछ पुस्तकें अभी किसी कारण अप्रकाशित हैं। उनका वर्णन भी कर दिया हैं। यह हमारे साहित्य की यात्रा कथा है। यह साहित्य यात्रा ही हमारी आस्था की यात्रा है। साहित्य के माध्यम से मुझे अपने धर्म व अन्य धर्मो के स्वाध्याय का सौभाग्य मिला। इस यात्रा के कारण हमे वहुत सारे मुनियों व साध्वीयों का आशीवाद मिला। वहुत से मुनियों व साध्वीयों के माध्यम से हमें अपनी ज्ञान जिज्ञासा शांत करने का वल मिला। साहित्य हमारी पहचान है, जीवन है, देव, गुरू व धर्म के प्रति श्रद्धा व आस्था का प्रतीक हमारा साहित्य है। हमारा समस्त साहित्य परम्परा व श्रद्धा व मान्यता पर आधारित तुलनात्मक साहित्य है। हमारी यह कोशिश रही है कि हमारे धर्मो का सन्मान हो। किसी भी कार्य से दूसरे धर्म को ठेस न पहुंचे। सव धर्मो का सन्मान हो।

अभिनंदन ग्रंथ की रूप रेखा

आशीवाद	:	आचार्य देवेन्द्र मुनि जी महाराज युवाचार्य श्री शिव मुनि जी महाराज
सद-प्रेरिका	:	उपप्रवर्तनी जैन ज्योति, जिन शाषण भाविका श्री स्वर्णकांता जी महाराज की ज्योष्ट शिष्य साध्वी श्री राजकुमारी जी महाराज, साध्वी श्री सुधा जी महाराज
सम्पादक मण्डल	:	साध्वी किरणा जी, साध्वी संतोष जी, साध्वी श्री श्रुति जी एम.ए., डा० धर्म चन्द जैन कुरूक्षेत्र, श्री चन्द खुराणा,

डा० धर्म सिंह पटियाला।

प्रकाशन विभाग :

खण्ड – १

१. राष्ट्र नेताओं के संदेश व भक्तों की शुभकामनाएं।
२. गद्य एवं पद्य रूप में

खण्ड – २

१. साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की गुरूणी परम्परा
२. साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के जीवन पर मुख्य सम्पादिकों के लेख
३. साध्वी मण्डल के लेख
४. साध्वी श्री के जीवन के सस्मरण (साधु-साध्वीयों के) द्वारा
५. साध्वी जी के सस्मरण (श्रावक व श्राविकाओं) के द्वारा

खण्ड – ३

१. प्रवचन के अंश

खण्ड – ४

१. अध्ययन, दर्शन एवं साहित्य

खण्ड – ५

१. इतिहास, कला-संस्कृति पर शोध निवंध

प्रकाशक :

१. उपप्रवर्तनी साध्वी स्वर्णकांता अभिनंदन ग्रंथ समारोह समिति अम्वाला शहर।
२. २५वीं महावीर निर्वाण शताब्दी

संयोजिका समिति, पुराना वस स्टैंड,
मालेरकोटला - १४८ ०२३ पंजाव।

दोनों पते पत्र व्यवहार के लिए रखे गए। ग्रंथ का प्रकाशन दिवाकर प्रकाशन आगरा से श्री श्री चन्द सुराणा के निर्देशन में प्रकाशित करने का निश्चय किया गया।

अभिनंदन ग्रंथ की तैयारीयां होना

अभिनंदन ग्रंथ के वारे में हमें साध्वी श्री सुधा जी महाराज का आदेश प्राप्त हो चुका था। अव इस आदेश को क्रियान्वित करने की जिम्मेवारी हम दोनों की थी। हम दोनों इस ग्रंथ के मुख्य सम्पादक थे। प्रकाशक भी थे। हर प्रकार के प्रकाशन की व्यवस्था की जिम्मेंवारी हम दोनों पर थी। हमें इस कार्य के करने में प्रसन्नता अनुभव हो रही थी। हमें इस कार्य में श्रमण संघ के तृतीय आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज व चतुर्थ आचार्य श्री शिव मुनि जी महाराज का आशीवाद प्राप्त था। उत्तर भारत प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्म चन्द्र जी महाराज की कृपा हमें हर समय प्राप्त हो रही थी।

हम ने साध्वी श्री सुधा जी महाराज की प्रेरणा से महासाध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का परिचय तैयार किया। इस में अभिनंदन ग्रंथ में प्रतिपादित विषयों का उल्लेख भी किया गया था। जिस पर आधारित लेखों का संकलन करना था। मुख्य संपादक होने के नाते यह काम काफी कठिन था। इस ग्रंथ के प्रकाशन में दोनो साध्वीयों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। समस्त साध्वी परिवार को साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के वारे में सस्मरण लिखने की प्रार्थना की गई। इस के अतिरिक्त समस्त विद्वानों को एक परिपत्र लिखने का हम ने मन वनाया। यह कार्य के लिए श्री